प्रथम अध्याय

प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि

1.1 प्रस्तावना

संचार के माध्यम के रूप में सामाजिक तथा सांस्कृतिक बदलाव में मीडिया की एक अहम भूमिका रही है। मीडिया समय के साथ परम्पराओं को गढ़ता रहा है अथवा उन्हें नया भी करता रहा है। भारत विविधताओं का देश है। यह विविधता यहाँ की भौगोलिकता के साथ-साथ सांस्कृतिक रूप में भी है। इन्हीं संस्कृति में बहुत सी कलाएँ एंव लोक कलाएं भी हैं। लोक कलाओं की यह अमर बेल कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक फैली हुई है। बहुरूपिया लोक कला भी इन्हीं लोक कलाओं में से एक है। यह भारत कि परम्परागत लोक कलाओं में से एक है। बहुरूपिया कला को लोकनाट्य माना जाता है। इस कला का इतिहास बेहद पुराना है। बहुरूपिया कला की चर्चा पुराणों में भी मिलती है। इस कला को राजस्थान के लोक नाट्य कला का दर्जा दिया गया है। यह कला दिल्ली सल्तनत के बाद औपनिवेशिक काल तक यह अपने पुरातन रूप के साथ चल रही है। इस कला के माध्यम से लोगों का मनोरंजन किया जाता है एवं मनोरंजन के साथ लोगों को जागरूक भी किया जाता है। यह कला मनोरंजन के परम्परागत माध्यमों में से एक है।

बहुरूपिया शुरूआती दौर में गुप्तचर के रूप में कार्य करते थे। वे जादूगर, मदारी, नट आदि बनकर पड़ोसी रियासतों में जाते थे और राजा को भेद बताया करते थे। उस दौर में बहुरूपियों को संरक्षण प्राप्त था और इनका राजदरबारों में आना जाना हुआ करता था। वक्त बदलने के साथ बहुरूपियों को राजदरबारों में मनोरंजन के लिए संरक्षण दिया जाने लगा। बहुरूपिया कला के प्रदर्शन से दरबार में मनोरंजन भी किया जाने लगा। बदलते समय के साथ बहुरूपिया कलाकार राजदरबारों के बाहर बहुरूपिया लोक कला का प्रदर्शन करने लगे। बहुरूपिया कलाकार कई प्रकार के स्वांग बनाकर अपने हाव भाव, वाकपटुता और कला कौशल से लोगों का मनोरंजन करते रहे हैं। राजाओं, नवाबों, जागीरदारों, सेठ-साहूकारों के अलावा, जनसाधारण का भी इन्हें संरक्षण प्राप्त होता था। बड़ी से बड़ी बातों को यह साधारण मनोरंजक ढंग से प्रकट कर वास्तविकता उजागर कर लोगों का ध्यान आकर्षित करते थे। टी.वी. सिनेमा और मनोरंजन के अन्य आधुनिक साधन होने के कारण अब ये लोक कलाकार कम ही दिखाई देते हैं। इन कलाकारों में हिंदू और मुसलमान दोनों हैं। मगर वे कला को मज़हब की बुनियाद पर विभाजित नहीं करते। मुसलमान बहुरूपिया कलाकार हिंदू प्रतीकों और देवी-देवताओं का रूप

धारण करने में गुरेज़ नहीं करता तो हिंदू भी पीर, फ़कीर या बादशाह बनने में संकोच नहीं करते। ज़्यादातर बहुरूपिया कलाकार बड़े मंचो से वंचित रहते हैं। वे फ़ुटपाथ पर अपना मजमा लगाते हैं और लोगों का मनोरंजन करते हैं।

बहुरूपिये प्रायः घुमक्कड़ होते हैं। एक समय इनकी कला चरम पर थी परंतु आज यह लोग भीख मांगने पर विवश हैं। पहले बहुरूपिया किसी विवाह व समारोह आदि में बहुत ही नाटकीय ढंग से आते थे कभी पुलिस, धर्मगुरु आदि भेष में और लोगों को चौंका दिया करते थे। बहुरूपियों का यह सामाजिक नियम था की यदि उनके इस स्वांग में इन्हें किसी ने पहचान लिया तो कलाकार पैसे या नेग नहीं लेते थे परंतु इनके द्वारा रचे गए स्वांग या नकली रूप में इन्हे कोई पहचान न पाये तो वह सफल माना जाता था। अंत में यह स्वयं की पहचान उद्घाटित करते थे। बदले में इन्हें पुरस्कृत किया जाता था। उस पुरस्कार राशि को बख्शीश कहा जाता था। आज बहुरूपिया समुदाय की यह विरासत और बहुरूपिया कलाकार विलुप्ति के कगार पर हैं। बहुरूपिया पहले समाज का मनोरंजन करता था परंतु अब इलेक्ट्रोनिक संचार के आने से बहुरूपिया लोगों का मनोरंजन कर पाने में असमर्थ रहा या बहुरूपिया की पुश्तैनी और पुरातन परंपरा मीडिया के आगे टिक न सकी। एक जमाना था जब बहुरूपियों को सम्मान के साथ देखा जाता था परन्तु वक्त के साथ इनकी हालत बद से बदतर होती चली गई। एक समय में यह लोगों का मनोरंजन किया करते थे। बहुरूपिया कला पूरे देश में देखने को मिलती है। बहुरूपिया कला से होने वाली आय से ही इनका जीवन यापन होता है परन्तु आज के युग में, इस कला से जुड़े कलाकार जो इस कला पर आश्रित हैं वे भूखे मरने को विवश हैं।

1.2 शोध सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

1.2.1 पुस्तक का अवलोकन

Mukhopadhyay, D. D. (1994). ***Folk Arts and Social Communication.*** **New Delhi: Publication Devision.**

इस पुस्तक में लेखक ने बताया है कि लोक कला के विकास में परम्पराएँ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।लोक कलाओं के लिए किसी विशेष तैयारी की आवश्यक्ता नहीं होती यह कम समय और संसाधन में में किया जाता है। लेखक ने बताया है यह कुछ संदेश देने वाली होती है सदैव। समाज के मुद्दों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप इसका स्वरूप सदियों से बदलता रहा है। परम्पराएँ बदलती रहनी वाली हैं यह सदा एक सी नहीं रहती। परम्परागत समाजों में कला समाज के एक अभिन्न अंग के रूप में रही है सामान्य जन जीवन में भी।

मिश्र, डॉ. अवधेश. (2015). *कला विमर्श: सृजन संस्कारों का प्रतिनिधि संचयन,* नई दिल्ली : आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.

इस पुस्तक में लेखक ने कला को परिभाषित किया एवं समाज की जटिलता तथा कला को सरल एवं सुसंगठित लेखन शैली में लिखा और कला के विविध आयाम पर चर्चा की गयी है। कला की अभिव्यक्ति व्यक्ति और समाज की आशाओं – आकांक्षाओं और क्षणिक समर्थताओं का एक सजीव और गतिशील दर्पण है। इस दर्पण में हम अपनी शक्ल देखते नहीं पहचानते और समझते हैं। कला ने ही मानव का संस्कार किया , उसे पशुवृत्ति से पृथक किया तथा वह सौंदर्यबोध दिया जिसके कारण मनुष्य ने इस सुंदर जगत की रचना कर डाली। ये बड़े से बड़े नगर , ये सुंदर आवास , ये अनेक प्रवृत्तियाँ मनुष्य के कलात्मक विकास की प्रतीक हैं और इन्हीं प्रतिकों के कारण मनुष्य की क्रमशः संस्कृति का बोध हमें होता चला आया है। सभी वस्तुएं कला की दें हैं , उनके सुंदर आकार प्रकारों में कला सन्निहित है। कला न होती तो मनुष्य गिरि कन्दराओं में रहता , वृक्ष की छल शरीर पर लपेटता , चारों हाथ पैर से चलता और संभव है बंदरों की भांति दिगंबर यहाँ से वहाँ घूमता रहता। संस्कृत के कल शब्द से कला नाम बना है। कल का अर्थ है सुंदर और कला वह जिसमें सौंदर्य का सन्निवेश होता हो। जो सौंदर्य का बोध करा सकें। जो सुंदर तत्व को हमारी दृष्टि तक पहुंचा सके , कला है। कला के ही विकास को संस्कृति का नाम दिया गया यह निर्विवाद है।

संस्कर्ता, नानूराम. (2006).*राजस्थानी लोक साहित्य.* राजस्थान: राजस्थानी ग्रंथगार.

लोक का अँग्रेजी प्रतिशब्द फोक (folk) है। इस (folk) शब्द को मध्ययुगीन अँग्रेजी में (folk) कहा जाता था एवं यही एंग्लो - सेक्सन भाषा में (volk) नाम से प्रचलित रहा। समान्य जन को एक शब्द में व्यक्त करने के लिए 'फोक' शब्द का प्रयोग किया गया। किन्तु जब जन समान्य की सांस्कृतिक धरोहर को शास्त्रीय रूपों से विभाजित करने का प्रश्न आया तो 'लोक' अथवा 'फोक' का अर्थ गंवार , ग्रामीण (हीन अर्थ में) एवं मूढ़ के रूप में भी किया गया , किन्तु यह अर्थत्वं संकीर्ण मनोवृत्ति का ही परिचायक था। एनसाईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में फोक शब्द के अर्थ की सीमा निर्धारण करते हुये कहा गया है कि किसी भी राष्ट्र कि नगरेतर सांस्कृतिक धारा को फोक के अंतर्गत स्वीकार करना होगा। ब्रिटेनिका का यह मत पाश्चात्य देशों के लिए चाहे सत्य हो , किन्तु भारत अथवा अन्य औद्योगिक रूप से कम विकसित देशों के लिए नगर व ग्राम का विभेद उतना बड़ा सत्य नहीं बन पाया है। आज कल लोक शब्द के बहुत से अर्थ समझे और किए जाते हैं। कुछ लोग लोक का अर्थ ग्रामीण से लेते हैं जहां बाहरी सभ्यता का प्रभाव न के बराबर हुआ हो। आज के लोक शब्द में साधारण जनता तथा

सम्पूर्ण मानवसमाज का अर्थ संकेतित है।अतः कहना पड़ता है कि लोक ,मानवजाति का वह एक समूह है जो ग्रामीण – संस्कार, अनुन्नत सभ्यता, निरक्षर, किन्तु संस्कारों से मंडित, तथाकथित शिक्षा – अनभिज्ञ और साथ ही साथ सवर्ण स सुभ्यता के घमंड से बहुत दूर है तथा प्राचीन परंपरा कि अटूट धारा में अखंड किलोलें करता रहता है। उसकी वाणी में रस है, अनिर्वचनीय सुख है और उसकी सहृदयता पर सुनहली छाप है।

Kumar, K. J. (2010). ***Mass Communication in india.*** **Mumbai : Jaico**

लोक माध्यमों और पारंपरिक कलाओं का भारत में प्रयोग धार्मिक और सामाजिक-राजनीतिक मकसद से किया जाता रहा है। ऐसे उदाहरण कम ही उदाहरण मिलते हैं जब उनका इस्तेमाल सिर्फ मनोरंजन के लिए किया गया हो। हालांकी उसमें तत्कालिकता, हास्य आदि का प्रयोग बखूबी होता आया है। वास्तव में ये लोक कलाएं सदियों से ज्ञान, लोक न्याय और संवाद के मंच के तौर पर प्रयोग होती आई हैं। जनसंचार माध्यमों से उनका जनता से निजी नाता होता है। लोक माध्यम आम लोगों के दिलो दिमाग से जुड़े हैं। इसलिए उनका असर भी व्यक्तिगत और गहरा होता है। इसके अलावा उनका कथ्य, शैली स्थानीय बोली भी संचार को ज्यादा सहज बनाती है। विभिन्न संस्कृतियों के बीच संचार के दौरान पैदा होने वाली बाधाएं यहां नहीं हैं। हर समूह या वर्ग के लिए खास तरह की लोककला मौजूद है। इनसे संबंध सहज जुड़ जाता है और संचार बाधाएं मौजूद नहीं रहती हैं। लोककला हर एक के लिए मौजूद है हर उम्र का शख्स इनका आनंद लेता है और वह भी बेहद कम कीमत पर।

मिश्र, ब्रह्माशंकर.(1999). ***शुक्रनीति*****. बनारस: चौखम्बा.**

शुक्राचार्य ने राजा की ओर से कई कलाओं के प्रश्रय तथा पोषण का निर्देश दिया है। शुक्र ने शिल्पी और वैतालिक दो स्पष्ट माध्यमधर्मियों के नामों का जिक्र किया है। वैतालिक राजा की स्तुति कर जगाते थे। भांड परिहास के पंडित होते थे। बहुरूपिया बगीचा और बनावटी जंगल बनाने में कुशल, सुत्रधार, आग्नेय चूर्ण बनाने वाले, रंगसाज, वार्ताहारा (संवाद पहुँचाने वाला), शंख-वंशी आदि के वादक, वाद्यजायप्रजीविन अर्थात बाजा बजाते हुए स्त्रियों के समक्ष नाच कर जीविका कमाने वाले जैसे माध्यवेत्ता लोग दरबारों की शोभा बढाते थे।

पारख, जवारीमल्ल. (2012). ***संचार एंव विकासात्मक संचार.*** **कोटा: वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय.**

वाचिक साहित्य और प्रदर्शनकारी कला रूपों में लोकनाट्य के विभिन्न रूप प्रचलित रहे हैं। संचार के विभिन्न माध्यमों के आविष्कार एवं प्रयोग के बावजूद लोकनाट्य के प्रति ग्रामीणों का आकर्षण आज भी बराबर बना

हुआ है। यह लोकनाट्य आज भी लोक जीवन में गहरे तक रचे और बसे हैं। त्योहारों और मेलों में होने वाली लोक नृत्य एवं लोक गीतों की अपनी एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है। दशहरा, दुर्गा पूजा, दिवाली, होली, गणगौर के अवसरों पर होने वाले ख्याल, तमाशा, व जात्रा, रम्मत, नौटंकी आदि लोकनाट्य के आयोजन की एक पुरानी परम्परा है। लोकनाट्य में प्रयुक्त होने वाले कथानकों के ब्यौरे और संवाद अदायगी समय एंव दूरी के साथ थोडा बहुत बदलती है परन्तु मूल कथानक वही रहता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह लोक नाट्य बहुत प्रसिद्ध हैं, क्योंकि यह कला की विधा ग्रामीणों को उनकी भाषा शैली में संवाद साधता है। संचार के अन्य माध्यमों के साथ अक्सर यह कम ही होता है।

Gooptu, N.(2001). *The politics of the urban poor in easily twentieth century India*:united Kingdom: cambrige university press.

इस पुस्तक के लेख के माध्यम से बाताया गया है कि कैसे एक समुदाय स्वांग रच कर अपना जीवन यापन करता है तथा भिन्न भिन्न स्वांग रचते हैं। बहुत से किरदारों का रोल अदा करते हैं कभी हनुमान तो कभी पीर बनते हैं कभी अधिकारी का स्वांग रचते हैं। इस पुस्तक मे बहुरूपिया और मसखरे मे अंतर बताया गया है। बहुरूपिया वह है जो भिन्न भिन्न स्वांग रचता है तथा बहुत से रूपों और वेश बनाता है। इस कला के द्वारा अर्जित आय से ही उदरपुर्ती करता है। मसखरा नवटंकी में लोगों को हसाने के लिए एक पात्र होता है तथा हंसी मज़ाक एवं चुटकुलों के माध्यम से गंभीर बातें भी कह दी जाती हैं। इस पुस्तक में इन दोनों के बीच का फर्क बताने का सफल प्रयास किया गया है तथा विस्तृत रूप से दोनों कि विशेषताओं पीआर विस्तृत चर्चा कि गयी है। बहुरूपिया कला कि विलुप्ति पर इस पुस्तक में भी चर्चा कि गयी है। इस पुस्तक में लेखक ने बहुरूपिया जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला तथा बहुरूपिया को वर्गीकृत भी किया और उन्होंने लिखा की नौटंकी मैं मसखरा की भूमिका निभाने वाले को भांड कहते हैं तथा बहुरूपिया वह है जो भिन्न भिन्न रूप बनाकर स्वांग रच कर जीवन यापन करता है तथा यह कला विलुप्ति की ओर अग्रसर है। इस पुरातन लोक कला कि विलुप्ति पर चिंता भी व्यक्त कि गयी है।

Emigh, J., & Emigh, U.(1986, February 15). Hajari bhand of rajasthan: a Joker in the deck. *The Drama Review*,30, 101-130. Retrieved from http://der.org/resources/study-guides/hajari-bhand-of-rajasthan-study-guide.pdf

इस पुस्तक में लेखक ने राजस्थान राज्य के चित्तौड़गढ़ जिले के बहुरूपिया लोक कला के कलाकार हजारी भांड के बारे में बताया है ये भांड समुदाय के नेता भी थे। हजारी ने लगभग 460 गाँव का भ्रमण किया तथा 25 से अधिक लोगों का रोल किया। मेवाड़ के राजदरबार में वह मनोरंजन करता था। यह एक ऐसा पात्र था जो सड़क और राजदरबार दोनों में सक्रिय था। हजारी स्वयं के भांड होने पर गर्व करता था और वह बहुत गर्व और सम्मान से बताता था मैं भांड हूँ मेरे पिता जी भी भांड थे। वह कहता था मैं राजदरबारों का भांड हूँ। मुझे 460 गाँव में कला के प्रदर्शन का राजा से अधिकार प्राप्त है। हजारी के दादा भी भांड थे जिस क्षेत्र को राजा ने इन्हें रहने के लिए दिया था वह भांड का खेड़ा के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में उसका बड़ा सम्मान है, वह भी दूसरों को सम्मान देता था। वह कहा करता था मैं भिखारी नहीं भांड हूँ। मैं चित्तौरगढ़ में रहता हूँ।

1.2.2 पूर्व में किए गए प्रकाशित एंव अप्रकाशित शोध का अध्ययन

Seikh, F. A. (2014). An Overview of Dambli Dance in Kashmir Valley: Past and Present Status. *IRC'S International Journal of Interdisciplinary Research in Social & Management Sciences,* 2(3), 78.

इस शोध में शोधार्थी ने कश्मीर राज्य के विभिन्न लोक नृत्यों पर विस्तृत चर्चा की है। इस शोध में शोधार्थी ने कश्मीर के प्रसिद्ध लोकनाट्य भांड पाथेर के साथ कश्मीर की प्रसिद्ध लोकनृत्य रूऊफ की चर्चा की है। कश्मीर के अन्य लोक नृत्य को भी शामिल किया गया है जैसे हफिजा नृत्य, भांड जश्न, बच्चा नगमा। शोधार्थी ने इस शोध में यह भी बताया की धमाल नृत्य जो की तस्वीर का एक प्रसिद्ध नृत्य है। यहसधार्मिक नृत्य है। इस नृत्य को जियारत पर जाते समय किया जाता है। जियारत का अर्थ होता है उपासना के लिए जाना। इस नृत्य का उद्गम स्थान तुर्किस्तान है। धमाली नृत्य को करने वालों की संख्या बहुत कम हो गई है। इस कला की ओर ना तो सरकार ने ध्यान दिया और ना ही धमाली नृत्य को करने वाले धमाली फकीरों ने। शोध के निष्कर्ष से यह भी सामने आया यह नृत्य अपनी मूल नृत्य शैली को भी संजोए रखने में असमर्थ है।

Nisar, A. (2017). From Suburversion to Survival: A Study of Kashmir's Folk Theatre. *Annals of Art, culture & humanities,* 2(2), 1-13.

इस शोध अध्ययन में बताया है, भांड पाथेर लोकनाट्य कला ने घाटी में संघर्ष किया है। भांड पाथेर कला के माध्यम से कई देश सांस्कृतिक रूप से करीब आए। इस कला ने कश्मीर घाटी में खुद की उपस्थिति को लेकर

संघर्ष किया है। शोधार्थी ने बताया कि भांड कलाकार बुद्धिजीवी नहीं है लेकिन कला के प्रदर्शन के माध्यम से आम लोगों को सीख देते हैं। ये कलाकार भी आमजन है। पर इनके नाम व्यंग्यात्मक रूपक पर रखे गए हैं जैसे भांड, कासिब। शोध पत्र के अनुसार इन नामों का तात्पर्य है जो अशिक्षित हो, जिसका सामाजिक स्तर निम्न हो, इन्हें मूर्ख तथा निम्न श्रेणी का कलाकार माना जाता है। इन कलाकारों ने कला के माध्यम से कश्मीर की संस्कृति और भाषा को यथास्वरूप बनाए रखा है। कश्मीर के संदर्भ में पाथेर शब्द विरोध का प्रतीक है, यह लोगों को सहमत करता है जो किसी मुद्दे पर असहमत होते हैं। आतंकी फतवे जारी कर बताते हैं कैसा व्यवहार करना है क्या पहनना है। 1990 से घाटी में हालात बदल गए हैं।घाटी में आतंकवाद के उदय के साथ लोगों को लोकगीत और लोकनृत्य के आयोजन से रोका जाता है। शोधार्थी ने शोध में बताया की आतंकी कहते हैं यह सब इस्लाम विरोधी है। घाटी में आतंकवाद के उदय के साथ हिंसा और हत्याओं के साथ हुआ है। शोधार्थी ने शोध में बताया है की आतंक का पहला शिकार संस्कृति ही थी, कलाकारों को पीटा गया वाद्ययंत्र तोड़ दिए गए। शोधार्थी लिखता है घाटी में लोक कला भी दफन हो रही है।

रावआनंद, अनमोल. (2012-13). ***लोकनाट्यो की परंपरा में विदर्भ का खड़ी गमन्त : एक अध्ययन*** **(अप्रकाशित). महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय.**

इस शोध में शोधार्थी ने बताया है। लोक शब्द दर्शन धातु से बना शब्द है। जिसका अर्थ देखना होता है। वेदों में लोक शब्द आम जनता का पर्यायवाची शब्द माना गया। उपनिषदों में दो लोक माने गए हैं 1. इहलोक 2. परलोक। आधुनिक शब्दकोश में लोक शब्द के आठ अर्थ दिये गए हैं 1.जगत 2.स्थान 3.प्रदेश 4.दिशा 5.लोक 6.यश 7.प्राणि 8.समाज आदि। हिन्दी साहित्य में लोक शब्द जन समान्य के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस लेख में बताया गया है लोक में वह मनुष्य है जो अपनी परम्पराओं में प्रचलित रीति रिवाज, खान पान, रहन सहन, लेन देन और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने से अशिक्षित कहलाते हैं। नागरिक संस्कृति और सुव्यवस्थित शिक्षा – नियमों के नजदीक न जाकर जो 'निरक्षर भट्टाचार्य' कहलाते हैं और ऐसा ही तथाकथित गँवार तथा ग्रामीण अंगूठाछाप मानव – समूह ही हमारा लोक है। पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में 'लोक' शब्द का अर्थ नगरों और ग्रामों में हुआ समूचा लोकसमुदाय है। इसलिए हमारा यह लोक, शिक्षा सीमाओं से बाहर, सभ्य जनों में उपेक्षित और आदिवासी जतियों में सर्वप्रथम गिना जाने वाला जन – समूह ही लोक कहलाता है।

कन्नौजीया, कुमार विजय. (2013-14). नट जाति की सामाजिक – आर्थिक : एक मानवशास्त्रीय अध्ययन (अप्रकाशित), महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय.

इस शोध में शोधार्थी ने बताया की अनुसूचित जाति शब्द का प्रयोग 1935 के भारत सरकार अधिनियम से हुआ है। अप्रैल 1936 अंग्रेज सरकार ने भारत में अनुसूचित जाति आदेश जारी किया चूंकि अनुसूचित जातियों की उत्पत्ति ही जाति प्रथा की अत्यधिक भेद भाव वाली और कभी कभी तो अमानवीय प्रकृति के परिणाम स्वरूप हुई है। जाति तंत्र को समझे बिना जातिगत समस्याओं को समझना कठिन है। इन जतियों के साथ हो रहे भेदभाव को समझना होगा फिर चाहे वह सामाजिक और आर्थिक हो, बालश्रम, बेगारी, वेश्यावृत्ति, न्यूनतम मजदूरी। शोधार्थी ने बताया कुछ घुमंतू जनजातियों ने स्थायी निवास तो बना लिए पर उनका जीवन बहुत ही कष्टों में व्यतीत हो रहा है। घुमंतू जन जतियों के ज़्यादातर लोगों को आज भी भूमि आवंटन नहीं किया गया है।

मांजरे, सचिन. (2011-12). *भतरा एवं हलबा जनजातियों की भौतिक संस्कृति : एक मानवशास्त्रीय अध्ययन* (अप्रकाशित). महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय.

इस शोध के माध्यम से यह निष्कर्ष आया कि आधुनिकीकरण के कारण इन जतियों का जीवन अस्त व्यस्त हो रहा है तथा इनकी समस्याओं में बेतहाशा इजाफा हो रहा है। बस्तर में खनिज सम्पदा जो कि ज़्यादातर जंगली जनजातियों के बस्तियों के नीचे या आस पास है। इसे प्राप्त करने के लिए उद्योग घराने अथवा सरकारें इन जनजातियों को इनका घर बार छोडने पर मजबूर भी कर रहे हैं। कहीं कहीं तो इन आदिवासियों के जान पर भी बन आती है। स्वयं की पहचान और परिवेश को बचाने की लड़ाई को लेकर। इस शोध के माध्यम से शोधार्थी ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर प्राप्त किया। सरकारें एक ओर तो इन आदिवासियों के लिए नियम और कानून बनाते हैं तथा दूसरी ओर इन्हें उजाड़ दिया जाता है।

मूनराव, माणिक. (2009-10). *बंजारा जनजाति में आधुनिकीकरण का प्रभाव : एक मानवशास्त्रीय अध्ययन* (अप्रकाशित). महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय.

इस शोध में शोधार्थी नें निष्कर्ष में यह पाया कि आधुनिकीकरण ने बंजारा जनजाति को प्रभावित किया है। आधुनिकीकरण के इस दौर में उनकी पुरातन परम्पराएँ प्रभावित हो रही हैं। बंजारा जनजाति का इतिहास बहुत समृद्ध है तथा यह भी एक भारतीय जनजाति है। आधुनिकीकरण ने बंजारा के रीति रिवाजों को भी प्रभावित किया है। बंजारा जनजाति में विवाह की परंपरा का स्वरूप उनके मूल स्वरूप से भिन्न हो रहा है। अब नवयुवक फिल्मों से प्रभावित हो कर उस प्रकार के विवाह की परंपरा को अपना रहे हैं। बंजारा के पारंपरिक रीतिरिवाज

भी प्रभावित हो रहे हैं। इनके पुरातन त्योहारों पर आधुनिक त्योहार हावी होने लगे हैं तथा इनका वर्चस्व भी बढ़ रहा है। शोधार्थी ने यह भी बतीयी की बंजारा जैसी जनजातियों में दहेज जैसी कुप्रथा का प्रचलन नहीं था परंतु आधुनिकीकरण के कारण यह कुरीति भी उनके समाज में व्याप्त हो गई है।

Pammet, C. (2008). Mock Court and The Pakistani bhand. Asian Theatre Journal. 25(2), 344-362. Retrieved from https://www.jstor.org/stable/pdf/27568457.pdf

यह शोध क्लेर पामेट ने पाकिस्तान के भांड पर किया है। इसमें बताया गया है कि पाकिस्तान में इन्हें घूमन्तु मस्खरा कहा जाता है। इस शोध पत्र के अनुसार भाँड भारत और पाकिस्तान में बहुतायत हैं परन्तु इनका इतिहास बहुत बिखरा हुआ है। इस पत्र में एमिग(1986) के शोध पत्र को उद्धरित करते हुए कहा गया है कि यह राजस्थान में बहुतायत हैं तथा वहाँ बहुरूपिया के नाम से प्रसिद्ध है। कश्मीर में इन्हें भांड पाथेर कहा जाता है। बंटवारे के समय बहुत से भांड पूर्वी पंजाब से पाकिस्तान चले गए। यह परम्परा हिन्दू और मुस्लिम शासकों के समय से शुरु होता है। वर्तमान में पाकिस्तानी भाँड मुस्लिम हैं ये खुद को मीर आलम या मिरासी से जुड़ा हुआ बताते हैं। पाकिस्तान के गुलाम अली की भी वंशावली भांडो से ही समबद्ध है। भांड यह कला बचपन से ही अपने परिजनों तथा संबंधियों से सीखते हैं। इस कला का प्रदर्शन वैवाहिक और सामाजिक आयोजन में किया जाता है। यह लोग आमंत्रण और बिना आमंत्रण के उपस्थित होते हैं। इस कला के प्रदर्शन में शब्द ही इनके औजार हैं। पाकिस्तान की संस्कृति में जो भांड को आयोजन में उपहार नहीं देता वह हास्य का पात्र बनता है। यह कलाकार राजनीति पर भी हास्य प्रदर्शन करते हैं।

Sharma, Dr. A. (2008, April). Role of Folk Media in Rural Development. International Journal of Education and Science Research, 2(2), 59-63. Retrieved from http://www.ijesrr.org/publication/19/IJESRR%20V-2-2-12%20E.pdf

इस शोध पत्र में बताया गया है कि लोक मीडिया के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को जागरूक करने का कार्य किया जाता है तथा सरकारी नीतियों के प्रचार एंव प्रसार का सशक्त माध्यम है। इस माध्यम की पहुँच कम है तथा कम दूरी तक है परन्तु बहुत प्रभावी माध्यम है। लोक कला लगभग सभी क्षेत्रों मे है फर्क वस इनके नाम में है। इस कला का प्रदर्शन क्षेत्रीय भाषा में होता है। इस कला का मौखिक ज्ञान एक पीढी से अगली पीढी में चलता रहता है। लोक कला को समझने के लिए किसी विशेष ज्ञान की आवश्यक्ता नहीं होती जबकि मुख्य

धारा के मीडिया को समझने के लिए उस भाषा आदि का ज्ञान होना आवश्यक होता है। लोक मिडीया के विषय में क्षेत्रीय मुद्दों का महत्व बहुत होता है।

1.2.3 पत्रिकाओं एंव वेबसाईट का अध्ययन

Raina, M. K. (2012, june 29). ***The Bhand Pather of Kashmir.*** **Retrieved from** http://www.koausa.org/BhandPather/

भाँड पाथेर कश्मीर का लोक नाट्य है। भाँड के रस्म सम्बन्धि नृत्य को छोक के नाम से जाना जाता है। इसे बहुत आदर एंव सम्मान के साथ किया जाता है। यह नृत्य शिव भगवती कि अराधना में किया जाता है। इसमें हिन्दू एंव मुस्लिम सभी तरह के कलाकार होते हैं।पाथेर भाँड कला का आयोजन मुस्लिम धार्मिक स्थल एंव सूफी दरगाहों पर भी किया जाता है। पाथेर भाँड कला में संस्कृत ड्रामा एंव परम्परागत ड्रामा के तत्व भी समाहित हैं। पाथेर भाँड खुद को प्रशिक्षित करते हैं एक अभिनेता की तरह, नर्तक, नट, जादूगर आदि के गुण सीखते हैं। अब यह कला भी खात्मे कि ओर अग्रसर है। इस कला के उम्दा कलाकार अब बूढे हो चुके हैं। अभिनय नृत्य और संगीत इस कला को पूर्ण बनाते हैं। पाथेर भाँड कला का आयोजन खुले में होता है। कला के प्रदर्शन के लिए कोई मंच कि बाध्यता नहीं है। इस कला के माध्यम से कलाकार सामाजिक, राजनीतिक एंव समसामायिक मुद्दों पर व्यंग्य करते हैं। बहुरूपिया कला की ही तरह इस कला पर धर्म कि कोई बाध्यता नहीं है।

Jha, M. (2015, November 30). A Lost Art of Story Telling: Behrupiya. ***Youthens News.*** Retrieved from http://www.youthensnews.com/a-lost-art-ofstorytelling-behrupiya/

प्राचीन काल में राजाओं और शासकों के काल में बहुरूपिया कला को एक राजकीय पहचान मिली हुई थी। परंतु आज यह कला और कलाकार दोनों मुश्किल में है। यह अब एक विलुप्त होती कला है। एक समय में बहुत प्रसिद्ध कला थी। आज इस कला के कलाकार गरीबी में जीवन जीने को विवश हैं। बहुरूपिया शब्दावली की उत्पत्ति उत्पत्ति संस्कृत के बहु शब्द से होती है जिसका अर्थ बहुत होता है। रूप का अर्थ होता है भिन्न प्रकार के रूपों को धारण करना किसी भी रूप को धारण करने के कारण मध्य काल के शासक बहुरूपिया का इस्तेमाल गुप्तचर के रूप में किया करते थे। यह लोग सजकर कभी भगवान कभी देवता कभी कोई पौराणिक पात्र बनते हैं। बहुरूपिया दूसरे राज्यों से गुप्त जानकारियों को भी लाया करते थे।

बारेठ, नारायण. (2010, मार्च 10). दम तोड़ती बहुरूपिया कला. ***BBC HINDI हिन्दी.*** Retrieved from http://www.bbc.com/hindi/news/2010/03/100309_bahurupia_sr.shtml?print=1

इस ब्लॉग मे बताया गया है कि बहुरूपिया कला किस तरह अपनी कद्र खो रही है। बहुरूपिया कला में धर्म आड़े नहीं आता मुस्लिम कलाकार हिन्दू देवी देवताओं के प्रतीकों का रूप धारण करता है तो साथ ही हिन्दू भी पीर फकीर और बादशाह बनने में संकोच नहीं करते। अब्दूल हमीद की भी चर्चा है जो दिल्ली में इस कला को प्रोत्साहित कर रहे हैं। बताते हैं लगभग पूरे देश में दो लाख बहुरूपिया हैं जो इस कला के माध्यम से अपना जीवन यापन करते हैं। राजस्थान के सीकर के यासीन पुरखों से मिली इस विरासत का मन से प्रदर्शन करते हैं परन्तु बच्चों को यह कला नहीं सिखाना चाहते। यासीन बताता है राजाओं के समय में इन कलाकारों की बहुत इज्जत हुआ करती थी इन्हें उमरयार कहा जाता था। ये रियासत के लिए जासूसी भी किया करते थे। अजमेर में ख्वाजा के उर्स के दौरान ये पंचायत भी करते थे। राजपूत राजा इनकी बहुत मदद किया करते थे। पंजाब के कृष्ण को यह कला यूरोप और अमेरिका तक ले गयी।

Khanal,V. (2014,December 8). Muslim family preserves the ancient art form, ***Times of India.***Retrieved fromhttp://timesofindia.indiatimes.com/city/allahabad/Muslim-family-preserves-ancient-art-form/articleshow/45419516.cms

टाइम्स ऑफ इंडिया की इस खबर के मुताबिक राजस्थान के दौसा जिले में एक मुस्लिम परिवार पुरातन लोककला बहुरूपिया को आज भी संरक्षित किए हुए हैं। यह लोग हिंदू मिथक पात्र और परंपरागत चरित्रों का स्वांग करते हैं। यह इनका पुश्तैनी पेशा है। पिछली पांच पीढ़ियों से ये लोग बहुरूपिया लोक कला के कलाकार हैं। मोहम्मद फरीद और उनके पांच भाई इस पेशे में हैं। यह लोग राष्ट्रीय शिल्प मेला में अक्सर आते हैं। केंद्रीय सरकार के सांस्कृतिक केंद्र द्वारा सम्मान भी मिल चुका है। फरीद और उनके भाई सरकार द्वारा प्रायोजित मेलों में ही जाते है। नौशाद बताते हैं कि मंच पर या लोगों के बीच बहुरूपिया के स्वांग की समय सीमा निर्धारित नहीं है। नौशाद और शमशाद भगवान शिव तथा हनुमान का स्वांग रचते हैं। रूप-सज्जा पर लगभग 500 रुपए खर्च होते हैं , परंतु इनकी आय इतनी नहीं हो पाती की ये रूप सज्जा पर ज़्यादा खर्च कर सकें।भले ही आज समाज विषमताओं में बंट गया हो बुद्धिजीवी से लेकर आम जन तक संप्रदायवाद एवं जातिवाद की लड़ाई में शरीक हैं

परंतु इन कलाकारों ने भारत की गंगा- जामुनी तहजीब को जीवित रखा है और बिना भेदभाव किए एक दूसरे के धर्म के देवी देवताओं का स्वांग रचते हैं। ये कलाकार चाहते हैं, इनका बेटा इस कला के साथ पढ़ाई भी करे क्योंकि इस कला द्वारा प्राप्त आय बहुत ही मामूली होती है परंतु नौशाद बताते हैं इस कला के कारण ही उन्हें भारत भर में भ्रमण का मौका मिला। इस कला के कलाकार चाहते हैं की इनकी ओर भी सरकार का धन जाए तथा इनके मुद्दों को भी सरकार गंभीरता से ले।

Chakraborty,Mou. (2016, अप्रैल 16). West Bengal Trinamool Congress bank on bahurupiya, folk artist to wee voters in rural belts, ***Hindustan Times.*** Retrieved from http://www.hindustantimes.com/assembly-elections/tmc-banks-on-bohurupis-folk-artistes-to-woo-voters-in-rural-belts/story-9TdBNeo5AaUHMAAKACoM1L.html

हिन्दुस्तान टाइम्स के इस लेख में बहुरूपिया कला की आकर्षण क्षमता एवं इसकी प्रभावशीलता पर चर्चा की गयी है। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के चुनावी प्रचार में बहुरूपिया सबसे महत्वपूर्ण और जरूरी अंग के रूप में सक्रिय हैं। स्किट के द्वारा पार्टी की रैली में लोगों को आकर्षित करते हैं, बीरभूम जिले के ग्रामीण क्षेत्रों मैं लोगों को आकर्षित करने के लिए बड़े नेताओं की उपस्थिती ज्यादा प्रभावी नहीं रही इनके साथ बहुरूपिया कलाकारों को बुलाना पड़ा बहुरूपिया ने लोगों का ध्यान अपनी और खींचा। राज्य सरकार की ओर से इन बहुरूपिया लोक कलाकारों को परिचय पत्र भी दिया गया तथा साथ ही मानदेय भी दिया गया। राज्य सरकार के बहुत से कार्यक्रमों को बहुरूपिया कला के माध्यम से लोगो तक पहुंचाया गया। मार्टिन डांस के माध्यम से लोगों को मलेरिया बुखार के प्रति जागरुक किया गया। बहुरूपिया कला को लोग भले ही भूल चुके हों परंतु इन चुनावी प्रचारों में बहुरूपिया कलाकारों का प्रयोग बहुत ही सफल एवं सार्थक रहा। इस प्रचार में बहुरूपिया कलाकारों के प्रति आकर्षण को देखकर नहीं लगा की लोगों का आकर्षण या चाह कम हुयी है बहुरूपिया कला के प्रति।

गोस्वामी, वज्रासर. (2014, मई 15). Bahurupiya workshop inaugurated at Shilp gram Western zone ezone cultural Centre organised the national impressionist behroopia workshop, ***Udaipur time.*** Retrieved fromhttp://udaipurtimes.com/behrupiya-workshop-inaugurated-at-shilpgram/

इस लेख में बताया गया है कि उदयपुर में शिल्पग्राम मेले का आयोजन होता है 10 राज्यों से आए बहुरूपिया ने भाग लिया फुरकान खान ने इनका स्वागत किया। कार्यशाला का आयोजन देश के सभी बहुरूपियों को एक मंच पर इकट्ठा करने की कोशिश की तथा बहुरूपिया कला को प्रोत्साहन देना तथा इसे बचाय रखने का एक सफल प्रयत्न है। बहुरूपिया एक लोक कला है यह भारत कि पुरातन कलाओं में से एक है। बहुरूपिया लोक कला के कलाकार राजस्थान में बहुतायत हैं। इस राज्य के बहुरूपिया लोक कलाकारों ने इस कला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलवाई। इस कला को प्रश्रय देने के लिए उदयपुर के शिल्पग्राम मेले में बहुरूपिया लोक कलाकारों को भी बुलाया जाता है। यह लोक कला विलुप्ति की कगार पर है। अंग्रेजों के काल में एंव इससे पूर्ववर्ती युग में इसे आधिकारिक संरक्षण प्राप्त हुआ करता था , परंतु अब पहले जैसे हालत न होने के कारण इस कला एवं कलाकार की हालत दयनीय हो गयी है। इस कला को बचाने के लिए ऐसे मेले एवं उत्सव का आयोजन किया जाता रहता है। बहुरूपिया कला को एक वक्त में में मुस्लिम तथा राजपूत शासकों ने सहारा दिया एवं अनुदान भी देते थे।

Chaterji,shoma.(2008, मार्च 8). Traces the journey of the bahurupiya, *The Tribune*.Retrieved fromhttp://www.tribuneindia.com/2008/20080308/saturday/main1.htm

ट्रिब्यून कि खबर के मुताबिक पश्चिम बंगाल में इन्हें बहुरूपी भी कहा जाता है। यह कभी देवी देवताओं के रूप में देखते हैं। अगले दिन ग्रहणी के रूप में तीसरे दिन किसी चीता या शेर की स्वांग में फिर कभी फ्रेम वाला चश्मा और छतरी को छड़ी की तरह इस्तेमाल करते हुये दिख जाते हैं। बहुरूपी सार्वजनिक जगहों पर प्रदर्शन करते हैं। यह उनके जीवन जीने की शैली है। विदेशी कपड़े और भोजन स्वीकार करते हैं। बिकने वाला कोई भी सामान ले लेते हैं, परंतु यह भिखारी नहीं है भीख नहीं मांगते हैं, स्वांग रच कर जीने की एक पुरातन परंपरा है। इस कला के माध्यम से ये लोक कलाकार मनोरंजन के रूप में लोगों तक गंभीर मुद्दों को पहुंचाते हैं, उन्हें शिक्षित करते हैं जैसे कि परिवार नियोजन आदि पर अपनी बात को रखते हैं। अशिक्षा आदि पर बात करते हैं। इन कलाकारों कि कला के प्रदर्शन का स्थान तय नहीं होता बल्कि यह एक गाँव से दूसरे गाँव तक घूमते रहते हैं और कला का प्रदर्शन करते हैं। इन्हें कला के प्रदर्शन के दौरान स्वांग रचने के लिए बहुत से समान को खुद के साथ ले कर चलना पड़ता है। यह कला अब विलुप्ति की ओर अग्रसर है।

शुक्ल, अनिल. (2017, अक्तूबर17). बहरूपिये दूसरों को खुश रखने वाले आज खुद दुखी हैं, ***लाइव हिंदुस्तान.*** Retrieved fromhttp://www.livehindustan.com/news/article/article1-%E0%A4%AC%E0%A4%B9%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%82%E0%A4%AA%E0%A4%BF%E0%A4%8F-128518.html

हिंदुस्तान के इस लेख में लिखा गया है कि बहुरूपिया जो लोगों को हँसाते थे आज स्वयं बहुत दुखी हैं। एक जमाना था, जब उन्हें सम्मान से देखा जाता था, लेकिन मनोरंजन के तौर-तरीकों में आ रहे बदलाव के साथ उनकी हालत बद से बदतर हो रही है। बहरूपियों को भिखारियों की जमात में रख दिया गया है। आज गाहे-बगाहे ही कोई बहुरूपिया दिखाई देता है। गर दिख भी जाए तो उसकी गरीबी के कारण उससे किसी स्वांग की उम्मीद नहीं की जा सकती। कुछ वर्षों इनके बच्चों को स्कूल में दाखिला नहीं दिया जाता था। यह एक पुरातन कला है इसे विलुप्त नहीं होना चाहिए अन्य कलाओं के साथ इसका संरक्षण भी बेहद आवश्यक है। बहुरूपियों की सर्वाधिक संख्या राजस्थान में है। साथ ही ये लोग उत्तरप्रदेश , मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में भी हैं।

जोशी, पी. (2011, दिसम्बर 2) राजस्थान के लोक नाट्य- स्वांग एवं बहुरूपिया. ***राजस्थान के विविध रंग.*** Retrieved from http://rajasthanstudy.blogspot.in/2011/02/blog-post_7986.html

बहुरूपिया लोक कला यह संपूर्ण राजस्थान में प्रचलित है। बहुरूपिया अपने चरित्र को बदलकर उसके अनुरूप अभिनय करने में माहिर होते हैं। रूप सज्जा के कारण वह वही चरित्र लगने लगते हैं। जिसकी वह नकल करते हैं। कई बार तो लोग असल और नकल में वेद करने में भी चकरा जाते हैं। किसी गांव में आने जाने पर यह नर नारी वृद्ध बाल को सभी का मनोरंजन करते हैं। यह प्रयास शादी-ब्याह मेले उत्सव आदि के अवसर पर गांव पहुंचते हैं। यह अपनी नकलची कला में अत्यंत ही दक्ष होते हैं। देवी देवताओं इतिहास पर श्लोक व महापुरुषों का रूप धारण करने के अलावा यह गांव की धनि जाने-माने लोगों की भी करते हैं। पौराणिक ग्रंथों में भी इस कला के प्रचलित होने के प्रमाण मिलते हैं। हिंदू राजाओं तथा मुगल बादशाह ने भी इस कला को उचित प्रश्रय दिया था बहुरूपिया कला राजस्थान की अपनी विशेष कला है। किंतु आज के विकसित तकनीकी समाज में अकेला लगातार कम होती जा रही है। इस विलुप्तप्राय कला का सबसे नामी कलाकार केलवा का परशुराम है। भीलवाड़ा की जानकी लाल भांड बहुरूपिया भी राजस्थान में प्रसिद्ध हैं और उस ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस कला को पहुंचाया है। उसने दिल्ली में आयोजित भारत का अपना उत्सव लंदन में आयोजित इंटरनेशनल फेस्टिवल ऑफ स्पीड म्यूजिक में राजस्थान का प्रतिनिधित्व भी किया था तथा अनेक संघ का प्रदर्शन कर

मनोरंजन किया अपना उत्सव में तो फकीर के वेश में पहुंचे तो सुरक्षाकर्मी उन्हें भ्रमवश बाहर निकालने लग गए थे। वे उनके परिचय पत्र पर भी विश्वास नहीं कर रहे थे।

Mehta, K. (2014, November 15). Meet 'Behrupiyas' at Kalagram. ***The Times of India.*** Retrieved from https://timesofindia.indiatimes.com/city/chandigarh/Meet-behrupiyas-at-Kalagram/articleshow/45154683.cms

इस लेख में बताया गया है कि अगर आप एक ही परिवार में अकबर शिव और विष्णु को देखें कला ग्राम शिल्प मेला में चौंकिए मत। यह कलाकारों का परिवार मेले में विलुप्त होती बहुरूपिया कला को बचा रहे हैं। शुभराती बहुरूपिया जो कि 55 साल के हैं। शुभराती अकबर की भूमिका में हैं। फरीद भगवान शिव तथा अकरम विष्णु के रोल को निभा रहे हैं। इनके परिवार की यह लगभग डेढ़ सौ साल पुरानी पुश्तैनी वंश परंपरा है। शुभराति कहते हैं यह एक मनोरंजन कला है। शुभराति बहुरूपिया का पूरा परिवार इस कला को बचाने की जद्दोजहद में लगा हुआ है। शुभराती यह बताते हैं की बहुरूपिया कला बहुत बुरे दौर से गुजर रही है।

भास्कर समाचार. (2016, जनवरी 3). बहुरुपिया स्पर्धा में प्रतिभागियों को देखकर तो जान ही निकल गई, दैनिक भास्कर. Retrieved fromhttp://www.bhaskar.com/news/CHH-BIL-OMC-fancy-dress-behrupiya-competition-5212394-PHO.html

बिलासपुर में यूथ क्लब चिरमिरी के तत्वधान में आयोजित बहुरूपिया के कुछ रूपों को देखकर लोग डर गए इसमे कोई श्रवण कुमार, दशरथ माझी, आदि के रूप में था। इस प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ समेत मध्यप्रदेश से भी बहुरूपिया आए तथा अपने हुनर का परचम लहराया। लगभग 250 बहुरूपिया कलाकारों नें इस आयोजन में शिरकत की। इस कार्यक्रम को देखने के लिए दर्शकों का हुजूम उमड़ पड़ा। इस कला के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीति पर भी बात की गयी। इन प्रमुख कुरीतियों में बलात्कार आदि कुरीतियों के दंड किस प्रकार हों। यह संदेश लोगों को दिया गया। सड़क के किनारे सो रहे लोगों को किस प्रकार मच्छर जनित बीमारियाँ जैसे डेंगू आदि लोगों पीड़ित हैं। उसके बारे में दिखाया गया। यह भी संदेश दिया गया मिथक से की विष्णु भगवान ने लोगों की भलाई के लिए कई अवतार लिए उसी प्रकार हमें जरूरत के अनुरूप अपना रोल अदा करना चाहिए समाज के लिए।

Mehta, K. (2016, November 9). Behrupiyas : Prominent Faces at Crafts Mela at Kalagram. The Times of India. Retrieved from https://timesofindia.indiatimes.com/city/chandigarh/Behrupiyas-Prominent-faces-at-Crafts-Mela-at-Kalagram/articleshow/55336674.cms

इस लेख में बताया गया है। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से पुरातन कला विरासत को बचाने के लिए कला शिल्प के राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को मेले और त्यौहारों में बुलाया जाता है। चंडीगढ़ राष्ट्रीय शिल्प मेला में यह सब जीवंत दिखा। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र एवं चंडीगढ़ प्रशासन का यह संयुक्त कार्यक्रम था। कलाग्राम में सबसे महत्वपूर्ण था मेलों में बहुरूपिया कलाकारों की उपस्थिति। बहुरूपिया कलाकार भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान शिव आदि रूपों में दिखे मेले को देखने आए। लोगों में बहुरूपिया कलाकारों के साथ सेल्फी लेने की होड़ सी लगी रही। बहुरूपिया कला की जड़ें भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल तक फैली हुई है। सलीम खान बहुरूपिया बता रहे थे। सरकार को इस कला के संरक्षण के बारे में कुछ सोचना चाहिए। यह कला और कलाकार दोनों ही विलुप्त हो रहे हैं। बहुत से कलाकार इस कला को छोड़कर जीवन यापन के लिए तथा रोजी रोटी के लिए अन्य पेशों में शामिल हो रहे हैं।

कश्मीर की वादियों का भांड दिल्ली में. (2014, 11 जनवरी). BBC हिन्दी. Retrieved From http://www.bbc.com/hindi/mobile/india/2014/01/140110_kashmir_play_bhand_pather_da.shtml

इस खबर में बताया है कि बयालिस साल के बशीर अहमद भगत तीसरी कक्षा से कश्मीरी लोकनाट्य पाथेर भांड करते आए हैं। पाथेर भांड का आयोजन कश्मीर क्षेत्र में शादी ब्याह में किया जाता है। बशीर अहमद बताते हैं हुनर तो अच्छा है पर चरमपंथ की वजह से दब गया है। 1990 के दशक में बशीर से कहा गया कि वे इस नाटक को बंद कर दें क्योंकि उनका काम मजहब के खिलाफ है। बशीर अहमद एवं उनके साथ जुड़े लोगों को जान से मारने की धमकियां भी दी गई। बहुत से लोगों ने डर में आकर अन्य काम सीखे मजदूरी चिनाई आदि। भांड पाथेर से समाज और राजनीति पर तंज भी किया जाता है। भारत एक विलुप्त होती कला है। एम के रैना एक निर्देशक और अभिनेता की आर्थिक सहायता से कश्मीर भगत नाम के थिएटर ग्रुप को दोबारा संजोया और भगत समुदाय की भांड कलाकारों को प्रशिक्षण दिया। कश्मीर के लोक नृत्य में पाथेर भांड सदियों से चली आ रही परंपरा है। कश्मीर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर डॉक्टर अजीज हजानी बताते हैं लगभग 30 वर्ष पहले तक

पाथेर भांड इस कला से अपनी जीविका चलाते थे। कला दिखाने के बदले लोग इन्हें कंबल, शॉल, खाने का सामान आदि वस्तुएं देते थे। चरमपंथ के कारण खुले में प्रदर्शन करना संभव नहीं रहा वादियों में। पिछले कुछ वर्षों में पाथेर भांड को आधुनिक नाट्य कला से जोड़ने की तरफ बहुत से लोगों ने काम किया परंतु ज्यादा सफलता नहीं मिली। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से प्रशिक्षित मुजम्मिल हयात भवानी कश्मीर की राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल पर द कंट्री विदाउट पोस्ट ऑफिस नामक नाटक का निर्देशन किया। मुजम्मिल अब श्रीनगर के एकता स्कूल ऑफ ड्रामा में नाट्य कला का प्रशिक्षण दे रहे हैं और नाटकों के मंचन के लिए ड्रामा ग्रुप भी है। मुजम्मिल बताते हैं उन्होंने बहुत से प्राध्यापक और प्रोफेसरों को खत लिखे कॉलेजों में काम करने की इच्छा से परंतु कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला।

आकाशदीप, अशोक. (2014, मई 5). Behrupiya : When was the last time you saw one. Indiatoday.retrived fromhttp://indiatoday.intoday.in/story/behrupiya-when-was-the-last-time-you-saw-one/1/359149.html

इस खबर में यह बताया गया है कैसे एक वैवाहिक आयोजन में एक व्यक्ति सबको पुलिस बनकर डरा देता है। बाद में वह अपना परिचय के रूप में देता है। फिर उसे नगद पुरस्कार दिया जाता है टीवी और रेडियो उद्भव से पहले आयोजन में के आने का इंतजार करते हैं। बहुरूपिया आएंगे तो लोगों को आश्चर्यचकित कर देंगे और फिर लोगों द्वारा उन्हें पुरस्कार दिया जाता था। बहुरूपिया भारत की पुरातन परंपरा का इतना पुराना भाग है। भारत का इतिहास मौर्यकाल के प्रसिद्ध ग्रंथ अर्थशास्त्र में भी इन का जिक्र मिलता है। धार्मिक अनुष्ठानों में इनकी झांकी निकाली जाती थी। लेखक ने यह भी बतीयी की तकनीकी के विस्तार के साथ विनम्र बहरूपियों को दरकिनार कर दिया गया कभी मुख्यधारा में रहे लोग आज विलुप्ति की कगार पर ह। 61 वें फिल्म समारोह पुरस्कार में कला और संस्कृति पर आधारित फिल्मों में प्रणव मुखर्जी ने डाल्टन श्री राम की शार्ट डॉक्यूमेंट्री को पुरस्कृत किया जो वह रूप जीवन पर आधारित थी। केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने श्री राम की फिल्म के लिए कहा अति यथार्थवादी चित्रण बताया वैश्विक समाज की एक मरणासन्न कला को तकनीकी के विकास ने उन्हें निराशा से भर दिया है। लेख में बताया गया है इस फिल्म को न्यू इंडि फेस्ट के मेरिट अवार्ड में शीर्ष सूची में शामिल किया बेहतर रूप सज्जा और वस्त्रों की सूची में इसे शामिल किया गया।

त्रिपाठी, अशोक. (2016, अक्टूबर29). अँधियारा हुआ बहुरूपिया. हिन्दुस्तान समाचार. Retrieved fromhttp://hindustansamacharnews.com/disguised-dark-and-light/

इस लेख में बताया गया है कि बहुरूपिया लोक कला के कलाकार बहुत सा रूप बनाते हैं। कभी ग्वालिनी बन जाते हैं- खूब मस्त-मस्त तो कभी पूरे शरीर में सिंदूर पोत कर और एक हाथ में गदा पकड़कर हनुमान जी। ऐसा लगता है कि साक्षात पवनसुत आशीर्वाद देने को आ गये हैं। कई लोग तो झुक कर प्रणाम भी करने लगते हैं- पवनसुत हनुमान की जय। इस लेख में लेखक ने बहुरूपियाकला को समझाने का प्रयास किया है और असली तथा नकली बहुरूपिया में पहचान की गयी है। लेख में यह भी बताया गया है की बहुरूपिया कलाकार बताते हैं की देश के नेता और अफसर अब इतने रूप बदलते हैं। लोगों के सामने सही व्यवहार बाद में देश को बेचने के कार्यों में संलिप्त पाए जाते हैं। इनसे बड़ा बहुरूपिया कौन होगा। लेख में लेखक ने बताया की कलाकार बताते हैं की इन राजनीतिक बहरूपियों के आगे हमारा नकली स्वांग कोई क्यों पसन्द करेगा।

बहुरूपिया कला को किया जीवंत. (2017, अप्रैल 30) जागरण. Retrieved fromhttp://www.jagran.com/uttar-pradesh/maharajganj-15948615.html

इस खबर में बताया गया है कि बदलते जमाने के साथ-साथ बहुरूपिया का जमाना भी चला गया। विभिन्न रूप सज्जा विभिन्न प्रकार से सुसज्जित कर लोगों को मनोरंजन करना ही बहुरूपिया कला हुआ करती थी। राजस्थानी बहुरूपिया दीपक भट्ट इस कला को जीवंत कर रहे हैं। लोगों को कभी हंसा कर कभी डरा कर अपने पूर्वजों की धरोहर विद्या से लोगों का मनोरंजन कर रहे हैं। दीपक कभी देवता में शंकर, हनुमान व नारद का रूप धारण कर तो कभी राज कपूर का मेरा नाम जोकर का जोकर, मिस्टर इंडियाका मोगैंबो, तो कभी चंद्रकांता का क्रूर सिंह, अलिफ लैलाका चकमक जिन्न, जानीदुश्मन,दूध दही वाली, गुरु चेला बनकर विशेष शैली व संवाद से लोगों के दिल में उतर जाता है। दीपक बताते हैं लोग अपनी पुरानी कला को बिसार रहे हैं। राजस्थान के जयपुर के सांगानेर निवासी दीपक देश के विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न हिस्सों में जाकर अपनी कला का प्रदर्शन कर अपनी जीविका चलाते हैं। बहुरूपिया कला वर्तमान की कला नहीं बल्कि सैकड़ों वर्षों से चली आ रही एक ऐसी कला है जिसका प्रयोग राजा महाराजा अपने सा म्राज्य को सुचारु रुप से चलाने के लिए करते थे। उस समय के साथ इस कला का इस्तेमाल गुप्तचरी में भी होने लगा। इस लेख में बहुरूपिया कलाकार का कहना है की भारतीय लोक संस्कृति की इस कला को बचाए रखा जाना चाहिए।

Brara, S. (2017, june 17). Body art, a blast from the past. Bussinessline. Retrieved from http://www.thehindubusinessline.com/specials/india-interior/body-art-india-folk-culture-behrupiya-human-statue/article9729393.ece

इस लेख में बताया गया कि पश्चिम बंगाल में बहुरूपिया कला बचाने के लिए कुछ लोगों ने मिलकर बंगाल बहुरूपी शिल्पी नाम का संगठन बनाया हुआ है। यह लोग इस कला के प्रश्रय संबंधी कार्य कर रहे हैं। लेख में बहुरूपिया कलाकार की आर्थिक हालत के बारे में बताया गया है। लेख के मुताबिक पश्चिम बंगाल सरकार की तरफ से बहुरूपिया कलाकारों को एक हजार रूपये प्रतिमाह पेंशन दी जाती है। बहुरूपिया कलाकारों को पश्चिम बंगाल में बहरूपी शिल्पी कहा जाता है। इन कलाकारों को राज्य सरकार की तरफ से कार्यक्रमों में बहुरूपिया कला के प्रदर्शन के मौके दिए जाते हैं। बहुरूपिया कलाकार मनोरंजन के साथ-साथ लोगों को जागरूक करने का कार्य भी करते हैं।

खन्डेलवाल, गौरव. (2017, जनवरी 25). दौसा में इन प्रतिभाओं का होगा सम्मान. पत्रिका. **Retrieved fromhttps://www.patrika.com/story/dausa/these-talents-will-be-respected-in-dausa-2458001.html**

इस खबर में बताया गया है कि 25 जनवरी, 2017 को राजस्थान राज्य के दौसा जिले में जिला स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए 29 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया इनमें सुबराती बहुरूपिया भी सम्मानित किया गया। सुबराती बहुरूपिया ने बहुरूपिया लोक कला का प्रदर्शन देश के साथ विदेशों में भी किया। इस लेख में बहुरूपिया कलाकारों की मौजूदा स्थिति को लेकर चिंता व्यक्त भी की गई है।

सुपर, एडमिन. (2015, जनवरी 16). देशी स्वांग से बनाई विदेश में पहचान. पत्रिका. Retrieved from https://www.patrika.com/story/bhilwara/identity-farce-created-abroad-by-country-326482.html

इस लेख के माध्यम से जानकीलाल भांड के बारे में बताया गया है। यह भी बताया गया है कि अंतर्राष्ट्रीय बहुरूपिया भांड को लंदन से लेकर न्यूयॉर्क तक मंकी मैन के रुप में पहचान मिली अपनी खास भाव- भंगिमाओं और दमदार आवाज के दम पर हर किसी को अपनी ओर खींच लेने वाले आकर्षक व्यक्तित्व के धनी जानकीलाल की उम्र 73वर्ष हो गई है। लेकिन आज भी अपनी कला से लोगों को अचंभित करना उनके लिए बाएं हाथ का काम है। कई शहरों में, गांवों में विभिन्न रूप धरकर घूमते हुए अपनी आजीविका चलाने वाले

भांड राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं। उन्हें ज्ञानी जैल सिंह ने सम्मानित किया था। वह लंदन न्यूयॉर्क जर्मनी और बेल्जियम जैसे देशों में अपनी कला का जलवा बिखेर चुके हैं। ब्रिटेन के चार नगरों में आयोजित दि म्यूजिकल विलेज नामक लोकोत्सव और लंदन व ग्लासगो नगर में संपन्न इंटरनेशनल फेस्टिवल ऑफ स्ट्रीट म्यूजिक में भाग लेकर उन्होंने विदेशियों का खूब मनोरंजन किया। अहमदाबाद शहर में आयोजित राष्ट्रीय बहुरूपिया सम्मेलन में भी जानकीलाल ने अपनी कला प्रतिभा की छाप छोड़ी। यह इनका खानदानी पेशा है। यह कला इन्हें पिता हजारीलाल से विरासत में मिली। इस लेख के माध्यम से बहुरूपिया कला के प्रभाव के बारे में बताया गया है।

1.3 समस्या का निर्धारण

कलाओं के क्षेत्र में भारत एक समृद्धशाली देश है। बहुत सी कलाओं की तरह बहुरूपिया भी एक लोककला है। बहुरूपिया लोककला भले ही बेहद पुरानी लोक कलाओं में शुमार है। अब बहुरूपिया लोक कला के कलाकार कम ही दिखाई देते हैं। बहुरूपिया कला अब विलुप्ति की कगार पर है। वर्षों से चली आ रही इस बहुरूपिया कला को अब कलाकार अपनी अगली पीढ़ी को इसे वंश परंपरा की धरोहर के रूप में सहेज कर रखने में असमर्थ है। बहुरूपिया कला वैसे तो भारत के साथ ही पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश में भी है। बहुरूपिया कलाकारों की सबसे ज्यादा तादाद राजस्थान राज्य में है। बहुत से बहुरूपिया कलाकार यहां आज भी इस कला के जरिए जीवन यापन करते हैं। कला को संरक्षित भी कर रहे हैं। इस शोध प्रबंध यह जानने का प्रयत्न किया गया है कि एक समय मैं दरबारों की लोक कला थी और आज कैसे यह कला हाशिए पर चली गई है। क्यों बहुरूपिया कलाकार अब इस कला को प्रश्रय देने में असमर्थ हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध में यह भी जानने का प्रयत्न किया जाएगा की अन्य लोक कलाओं की तरह यह कला क्यों नहीं चल पाई।

1.4 अध्ययन का क्षेत्र

शोधार्थी ने इस शोध अध्ययन के लिए राजस्थान राज्य का चयन किया है। राजस्थान में बहुरूपिया लोक कला को रजवाड़ों का प्रश्रय प्राप्त था। जिस कारण औपनिवेशिक काल में यह कला फलती-फूलती रही। हलांकि देश के अन्य प्रांतों में तत्कालीन समय में इस कला को राजाश्रय नहीं मिलने से वहां यह कला धीरे- धीरे सिमटने लगी। आजादी के बाद बहुरूपिया कला संरक्षण के अभाव में सिमटते-सिमटते राजस्थान के कुछ कस्बाई इलाकों तक सीमित हो गयी है। बहुरूपिया लोक कला अन्य नामों से दूसरे राज्यों में भी देखने को मिलती है। बहुरूपिया

लोक कला का कहीं-कहीं थोड़ा स्वरूप भी बदला है। देश मे सर्वाधिक संख्या में बहुरूपिया राजस्थान राज्य में हैं। अन्य राज्यों में जो बहुरूपिया हैं उनमें से अधिकांश राजस्थान राज्य से हैं। राजस्थान के राजदरबारों में बहुरूपिया अभिनय को प्रश्रय मिलता रहा है। क्षेत्रफल की दृष्टि राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। बहरूपिय कला का ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी एक प्रभावशाली कला है। राजस्थान में 75 फिसदी आबादी ग्रामीण क्षेत्र में तथा 25 फिसदी आबादी शहरी क्षेत्र में निवास करती है। लोक कलाओं में भाषाओं से ज्यादा बोलियों को तवज्जो दी जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग ज्यादा पढ़े लिखे नहीं होते। राजस्थान राज्य में साक्षरता दर 66 प्रतिशत है। बहुरूपिया कलाकारों की संख्या राजस्थान के दौसा राज्य में सबसे ज्यादा है। बहुरूपिया लोक कला इस क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध भी है। दौसा जिले की साक्षरता दर 68 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बहुरूपिया कला का प्रदर्शन होता है।

1. बाँदीकुई एक कस्बा तथा एक पंचायत भी है, यह राजस्थान राज्य के दौसा जिले में है। इस कस्बे में देश का प्रसिद्ध बहुरूपिया परिवार रहता है जो देश के विभिन्न राज्यों तथा विदेशों में भी इस कला का प्रदर्शन कर चुके हैं। शिवराज उर्फ सुबराती खाँ तथा उनका परिवार इस परम्परा में है, यह परम्परा उनकी पुस्तैनी परम्परा है।
2. राजस्थान राज्य के दौसा जिले में बाँदीकुई से 45 किलोमीटर दूर सैंथल नाम का एक कस्बा है, यह नगर पंचायत भी है। यहाँ भी बहरूपिए हैं। सैंथल में भी कुछ बहरूपियों के घर हैं तथा यह उनकी पुश्तैनी कला है।
3. राजस्थान राज्य के दौसा जिले में एक आभानेरी नाम का गाँव है। 21 – 22 सितम्बर को आभानेरी महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस महोत्सव में राज्य कि लोक कलाओं का प्रदर्शन किया जाता है जिनमें बहुरूपिया लोक कला प्रमुख है।

1.5 अध्ययन का उद्देश्य

- बहुरूपिया लोक कला की संचार शैली का अध्ययन
- बहुरूपिया कलाकारों कीवर्तमान स्थिति का अध्ययन
- मनोरंजन माध्यम के रूप में बहुरूपिया लोक कला की प्रभावशीलता का अध्ययन

1.6 शोध प्रश्न

- एक मनोरंजन माध्यम के तौर पर बहुरूपिया लोक कला की आज के संदर्भों में क्या भूमिका है?
- मनोरंजन माध्यम के रूप में बहुरूपिया लोक कला की प्रभावशीलता क्या है?

1.7 अध्ययन का महत्व

- प्रस्तुत शोध अध्ययन, बहुरूपिया लोक कला के क्षेत्र में जानकारी व ज्ञान के विस्तार में सहायक होगा। यह शोध बहुरूपिया कलाकारों को समाज से न जोड़ पाने के कारणों का अध्ययन करके अन्तर कम करेगा।

1.8 शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध लोक कला पर आधारित है। इस प्रकार के शोध में विषय के अनुरूप गुणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाता है। बहुरूपिया लोक कला पर आधारित इस शोध में दर्शकों एवं कलाकारों से उनके विचार शामिल किए गए। **शोध एंव विषय की प्रकृति(Nature of Subject)**के आधार पर यह आधारभूत शोध था। इस प्रकार के शोध में कुछ सिद्धान्तों एंव नियमों के आधार पर शोध को संपन्न करना होता है। बहुरूपिया लोक कलाकार एवं कला की स्थिति का अध्ययन इस शोध में किया गाया है। इस अध्ययन में बहुरूपिया कला का अन्य लोक कलाओं से पिछड़ने के कारणों का अध्ययन शामिल है।

शोध के उप-प्रकार (Sub Type of Research)के रूप में विवरणात्मक अनुसंधान का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन के अन्तर्गत बहुरूपिया कला से जुड़ी सामाग्री को एकत्रित किया गया एवं उनका तार्किक, वर्णन किया गया है। इस प्रकार के शोध में प्राकल्पना का निर्माण न होकर शोध प्रश्न को शामिल किया जाता है। इसलिए प्रस्तुत शोध की अनुसंधान प्ररचना के अन्तर्गत शोध के उप-प्रकार के रूप में विवरणात्मक शोध को शामिल किया गया है। **शोध के उपागम(Research Approach)** किसी भी शोध अध्ययन में शोध के प्रश्न का उत्तर पाने अथवा उपकल्पना को जाँचने के लिए उपागम का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध में शोध प्रश्न के परिणाम तक पहुंचने के लिए **मिश्रित उपागम(Mixed Method)**का प्रयोग किया गया है। मिश्रित उपागम के प्रयोग से शोध प्ररचना की जटिलता समाप्त हो जाती है। प्रस्तुत शोध को cross sectional विधि द्वारा शोध के प्रश्न का उत्तर हल किया गया। इस प्रकार के शोध में शोधार्थी उत्तरदाताओं से एक बार सम्पर्क करता है। यह शोध की समय सीमा और शोध के विषय एवं शाखा पर निर्भर करता है। ज्यादातर शैक्षणिक शोध इस पद्धति

द्वारा हल किए जाते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध प्रश्न के अनुरूप (longitudinal) का चयन प्रासंगिक है पर शोध की समय सीमा को देखते हुए शोध (Cross Sectional) विधि द्वारा किया गया। गहन अध्ययन शोध विधि द्वारा शोध प्रश्न को हल किया गया।

आँकड़ा चयन उपकरण एंव विधि (Sampling Design)

समग्र (Universe)

किसी भी शोध के अध्ययन के लिए समग्र का चयन किया जाता है। समग्र शोध के विषय व उद्देश्यों तथा चर के आधार पर तय किए जाते हैं। शोध का समग्र कोई भी हो सकता है व्यक्ति, स्थान, घटना, संगठन आदि।राजस्थान राज्य के बहुरूपिया कलाकार एवं बहुरूपिया कला का प्रदर्शन देख चुके लोग तथा बहुरूपिया लोक कला के विशषज्ञ प्रस्तुत अध्ययन के शोध प्रश्न एवं शोध प्ररचना के अनुरूप universe हैं।

निदर्शन इकाई- सैंथल, बाँदीकुई, आभानेरी

निदर्शन चयन ढाँचा (Sampling Frame)- एक आदर्श निदर्शन सदैव समग्र का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। समग्र के सभी गुण जो शोध के लिए प्रासांगिक हैं वह सब निदर्शन में होना चाहिए अन्यथा शोध में पक्षपात नजर आता है। बहुरूपिया कला का प्रदर्शन देख चुके लोग तथा बहुरूपिया कलाकार, बहुरूपिया कला के विशेषज्ञ यह सभी बहुरूपिया कला से जुड़े हुए हैं। यह गुण ही समग्र में से निदर्शन के चयन का आधार है। शोध प्रश्न व उद्देश्य के अनुरूप यह निदर्शन चयन का प्रासांगिक ढांचा है।

निदर्शन संख्या (Sample Size)- 100 बहुरूपिया कला का प्रदर्शन देख चुके लोग, 10 बहुरूपिया कलाकार, 2 साक्षात्कार

निदर्शन चयन विधि(Sample Selection) - निदर्शन चयन विधि में दैव निदर्शन विधि द्वारा आँकड़ों का चयन किया गया

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निदर्शन का चयन वैज्ञानिक विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुत शोध में तीन प्रकार की निदर्शन चयन विधि का उपयोग किया गया है। बहुरूपिया कलाकारों का चयन बर्फ गोला(Snow Ball Sampling) विधि द्वारा किया गया है। बहुरूपिया कलाकारों की घटती संख्या एवं एक जगह स्थाई न रहने के कारण इस पद्धति द्वारा निदर्शन का चयन किया गया। दूसरे निदर्शन के चयन के लिए बहुरूपिया कला का प्रदर्शन देख चुके लोगों का चयन व्यवस्थित निदर्शन पद्धति (Systematic Sampling) द्वारा किया गया है। इस निदर्शन के चयन के लिए आभानेरी महोत्सव देखने आए दर्शकों में से प्रत्येक दसवें व्यक्ति का चयन किया गया। निदर्शन

त्रुटी से बचने के लिए विदेशी सैलानियों को समग्र का भाग नहीं माना गया। तीसरे प्रकार के निदर्शन के चयन के लिए उद्देश्यात्मक पद्धति(Purposive Sampling) का उपयोग किया गया।

आँकड़ा चयन के उपकरण एंव तकनीक (Tool and Techniques of Data Collection)- प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों का चयन किया गया है। प्राथमिक आंकड़ो का चयन शोध के चरों के अनुरूप किया जाता है। इस शोध में बहुरूपिया कलाकारों के अशिक्षित होने के कारण आंकड़ों के चयन के लिए अनुसूची का प्रयोग किया गया। मिश्रित प्रश्न पत्र (Mixed Questionnaire) बहुरूपिया कला का प्रदर्शन देख चुके लोगों से खुले एवं बन्द प्रश्नों के माध्यम से प्रश्नावली के द्वारा आंकड़ों का चयन किया गया है। आंकड़ों के संकलन के लिए साक्षात्कार(Interview) को शामिल किया गया है।

1.9 शोध की सीमाएँ

- प्रस्तुत शोध कार्य को एक तय समय में संपन्न करने में कुछ समस्याएँ आईं। बहुरूपिया लोक कला के अध्ययन के लिए कम से कम एक वर्ष कलाकारों के साथ समय-समय पर मिलने एवं उनके साथ रहने पर पर समस्याओं को और नजदीक से देखा जा सकता था। इस अध्ययन के लिए नृजातिय शोध से एक विस्तृत एवं गहन अध्ययन होता। किसी भी शोध में एक निश्चित समय सीमा होती है। समय सीमा को ध्यान में रखते हुए नृजातिय शोध की दृष्टि से एक वर्ष तक के समय की अनुमति नहीं थी।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए क्रॉस वर्गीय अध्ययन (Cross Sectional Studies) का प्रयोग किया गया। शोध समस्या के अनुरूप अनुदैर्ध्य (Longitudinal Studies) विधि द्वारा अध्ययन बहुत से और प्रश्नों को हल करता एवं बहुत से तार्किक प्रश्नों को जन्म भी देता परन्तु सीमा को ध्यान में रखते ऐसा नहीं किया गया।

1.10 शोध का सैद्धांतिक पक्ष

शोध में प्रयोग किए गए मॉडल और सिद्धान्त

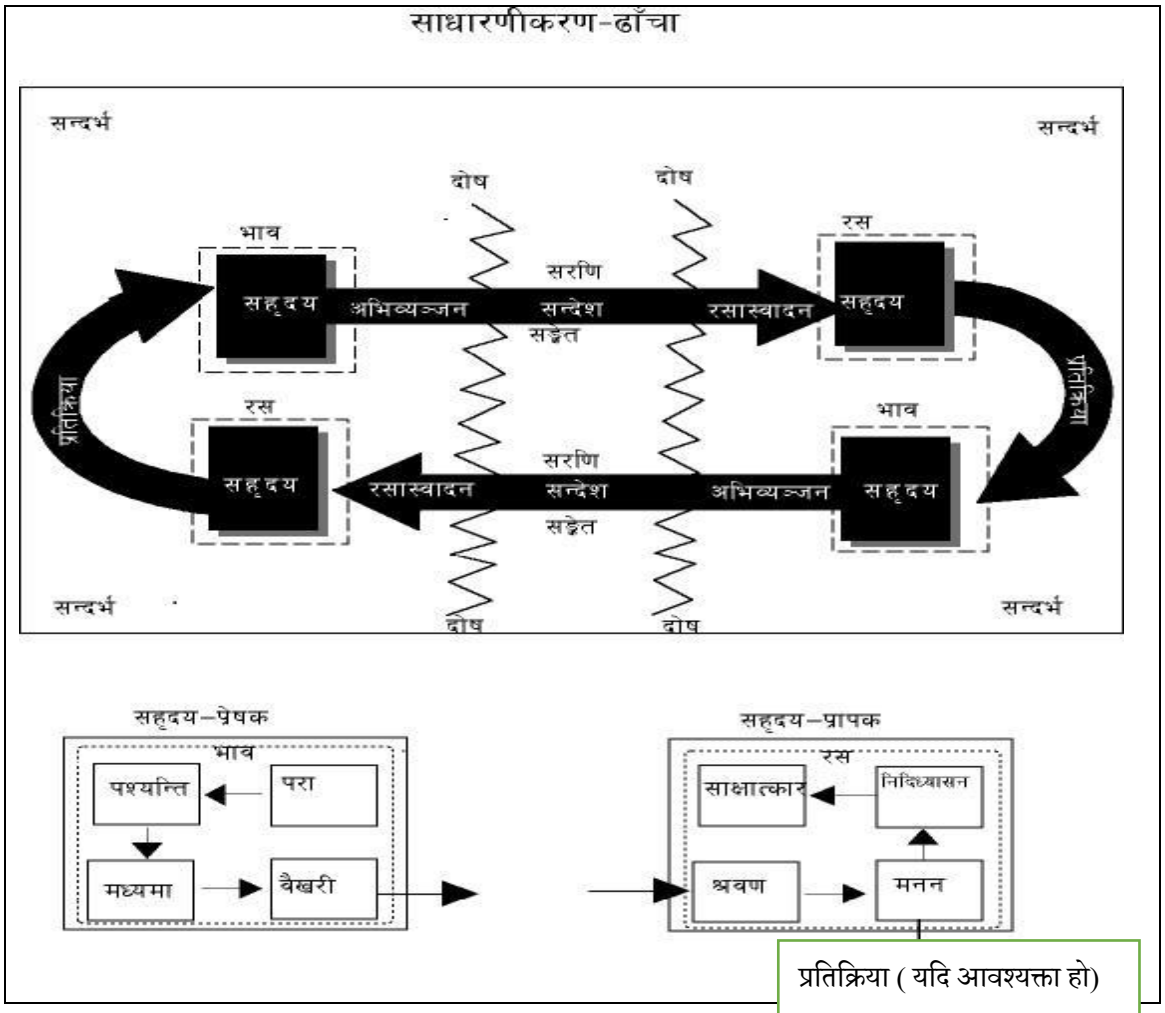

प्रस्तुत शोध में शोध समस्या एवं उद्देश्यों के अनुरूप संचार के मॉडल और सिद्धांत को समाहित किया गया है। यह शोध मनोरंजन एवं बहुरूपिया लोक कला पर केंद्रित है। किसी भी कला अथवा प्रदर्शन एवं वक्तव्य के दौरान कलाकार वक्ता की भावना को ठीक उसी तरह से समझने के लिए सहृदय होना आवश्यक है। जनसंचार के विभिन्न मॉडलों की तरह एक साधारणीकरण मॉडल भी है। यह मॉडल शोध की जरूरत के अनुसार एकदम प्रासंगिक है। साधारणीकरण मॉडल को रूप देने का कार्य निर्मलमणीअधिकारी ने किया। इस मॉडल की उत्पत्ति का मूल स्रोत भरतमुनि का नाट्यशास्त्र एवं भरथरी का नाट्य पद है। साधारणीकरण शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत

के साधारण शब्द से होती है। साधारण प्रस्तुति साधारणीकरण वैश्वीकरण। जब प्रेषक और प्रापक में साधारणीकरण की प्रक्रिया चलती है उस दौरान दोनों में सहृदयता होती है।[1]

साधारणीकरण तब प्राप्त होता है जब लोगों में आत्मीयता या एकात्मता की भावना का जन्म होता है। जब बहुरूपिया कलाकार किसी भगवान या पीर के रूप में होते हैं। उस समय बहरूपिय कलाकार पूरी तल्लानता से अभिनय कर रहे होते हैं। ठीक उसी समय कलाकरों को देख रहे दर्शकों में बहुत से लोग इन कलाकारों का सच में आदर करते हैं। यह सधारणीकरणकि प्रक्रिया है। इसके लिए हृदय में सहृदयता का होना का आवश्यक है।

साधारणीकरण मॉडल में निम्न चीजें समाहित हैं-

सहृदय, भाव, अभिव्यंजना, संदेश, सारणी, रसास्वादन, दोष, संदर्भ, प्रतिक्रिया

भाव को कई भागों में बांटा गया है स्थाई भाव, व्यभिचारी भावअथवासंचारी भाव एवं सात्विक भाव।

संदेश शाब्दिक और गैर शाब्दिक होते हैं। नाट्यशास्त्र से विशिष्ट भागों में विभक्त करता है आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक प्रत्येक के कई प्रकार हैं। आंगिक के तीन प्रकार हैं एवं वाचिक 12 प्रकार हैं। कलाकारों द्वारा दिया जाने वाला संदेश भी शाब्दिक और गैर शाब्दिक होता है। शाब्दिक संदेश बोलकर जबकि गैर शाब्दिक संदेश तब दिया जाता है। कलाकार हावभाव से कोई संदेश देता है।

संदेश के संचार के लिए सारणी की जरूरत पड़ती है। मानस और शरीर को भी सारणी माना जाता है। मानस को हिंदू मान्यताओं के आधार पर छठी इंद्री माना जाता है। यह पांच इंद्रियों का विभु है। मानस का विभू आत्मा को कहा जाता है।

भरतमुनि के अनुसार विभव और अनुभव के मिश्रण से व्यभिचार भाव से रस पैदा होता है। स्थाई भाव रस का नृतत्व करता है। स्थाई भाव मस्तिष्क में विभाव को जन्म देता है अनुभव और संचारी भाव के द्वारा। रसास्वादन करते समय अभिव्यंजना के संदर्भ में शब्दों के चार प्रकार बताए गए हैं श्रवण ,मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार। भरत मुनि साधारणीकरण को व्याख्यायित करते हुए बताते हैं जब अभिनेता और दर्शक के भीतर एक ही भाव होता है उसे समानुभूति कहते हैं। समानुभूति के बाद रसास्वादन होता है।

संचार कभी भी बिना व्यवधान के संपन्न नहीं होता। संचार मैं कुछ व्यवधान व दबाव आते हैं। जिससे संदेश को समझने में गलतफहमी होती है। इसे रस भंग के नाम से जाना जाता है। रसभंग के बहुत से कारण हो

[1]From Media Mimansa, by Dr Nirmal Mani Adhikary, (2015), Bhopal:

सकते हैं। भर्तहरि ने इस संभावना को वाक्यपदीय कहा है। संदेश में क्या कहा है और उसके मायने क्या है। संदेश को प्रमाणिक बनाने के लिए अथवा प्रमाणिक साबित करने के लिए हम जो करते हैं वह संदर्भ है। कलाकार या कोई वक्ता जब कुछ अभिव्यक्त कर रहा हो, वह संदेश किसी कारण से भेजे हुए रूप में न पहुँच पाए।

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया का अर्थ होता है प्रापक को संदेश प्राप्त होने के बाद दी गई प्रतिक्रिया। संचार प्रक्रिया के दौरान प्राप्त की प्रतिपुष्टि से तय होता है कि उसकी सक्रिय भूमिका रही है। संचार प्रक्रिया में कभी प्रेषक प्रापक बनता है तो कभी प्रापक परीक्षक होता है। यह प्रक्रिया साथ साथ चलती है। कलाकार जब प्रदर्शन कर रहा होता है। उसे किसी पर हास्य करने के लिए कहा जाए या बात की जाए। कलाकार दर्शकों से कुछ कहना चाहे तो यह प्रतिपुष्टी के नाम से जाना जाता है। आधुनिक संचार में इस (Feedback) के नाम से जाना जाता है।

साधारणीकरण मॉडल की अनोखी विशेषता है की प्रतिपुष्टि सार्वभौमिक नहीं है। प्रतिपुष्टि तभी होगी जब उसकी आवश्यकता होगी। निधि अध्यापन स्तर तक पहुंचने के बाद प्रतिपुष्टि की आवश्यकता नहीं रह जाती है।